दृष्टि The Vision

19 AUG 2019

drishti

ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

DTVF/19(JS)–ESY-E4

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

Name: Ravi gangwar **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** FP/JULY-19/451

Center & Date: Mukherjee Nagar, 18/8/2019 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 080137

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णत: काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

खंड A और B में प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: **125 × 2 = 250**

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: **125 × 2 = 250**

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. सोशल मीडिया : सामाजिक कम व्यक्तिगत ज़्यादा।
   Social media : More personal than social.
2. भारत में सामाजिक सशक्तीकरण की प्रक्रिया में आरक्षण का योगदान तथा इसके विरोधाभास।
   The role of reservation in social empowerment in India: Contribution and Contradiction.
3. भूमंडलीकरण के दौर में संरक्षणवादी नीतियाँ अल्पकालिक हितों की पूर्ति से ज़्यादा कुछ नहीं है।
   Protectionist measures in the era of globalization are nothing more than the fulfilment of short-term interests.
4. जलवायु परिवर्तन : करे कोई भरे कोई।
   Climate Change : Done by someone and paid by someone else.

खंड–B / SECTION –B

1. एक सुखी जीवन प्रकृति से प्रेरित एवं सहजता से संचालित होता है।
   A good life is the one inspired by nature and conducted with ease.
2. व्यावहारिकता आदर्श की पुष्टि करती है।
   Pragmatism affirms the ideal.
3. मूल्यविहीन शिक्षा व्यक्ति को चतुर शैतान बनाती है।
   Education without values makes man a cleverer devil.
4. विकसित होते भारतीय समाज का द्वंद्व।
   Conflicts in developing Indian society.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

खंड–A / SECTION –A

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. सोशल मीडिया : सामाजिक कम व्यक्तिगत ज़्यादा।

   Social media : More personal than social.

2. भारत में सामाजिक सशक्तीकरण की प्रक्रिया में आरक्षण का योगदान तथा इसके विरोधाभास।

   The role of reservation in social empowerment in India: Contribution and Contradiction.

3. भूमंडलीकरण के दौर में संरक्षणवादी नीतियाँ अल्पकालिक हितों की पूर्ति से ज़्यादा कुछ नहीं है।

   Protectionist measures in the era of globalization are nothing more than the fulfilment of short-term interests.

4. जलवायु परिवर्तन : करे कोई भरे कोई।

   Climate Change : Done by someone and paid by someone else.

* जलवायु परिवर्तन : करे कोई भरे कोई *

"कर्मण्ये वाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन"

उपर्युक्त वैक्तियाँ गीता में श्रीकृष्ण द्वारा व्यक्ति को कर्मयोगि बनाने के उद्देश्य से कहीं गयी थीं जिनका मतलब है कि " कर्म पर ही तुम्हारा अधिकार है, फल की चिन्ता मत करो।" इस प्रकार गीता व्यक्ति

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

को निश्चिन्त होकर कर्म करने की प्रेरणा देती है और फल का अधिकार दैवीय सत्ता पर। इस दर्शन का मूल उद्देश्य था कि व्यक्ति अपने कर्तव्य का पालन निडर होकर करे और अपने परिणामों को निःसंकोच स्वीकार करें। आधुनिक युग में व्यक्ति कर्म तो कर रहा है किन्तु वह अपना कर्म कर्तव्य प्रेरित न होकर भोग-विलास, प्रतिस्पर्द्धा आदि से प्रेरित होकर कर रहा है। जिसके चलते प्राप्त होने वाले परिणाम भी घातक होते जा रहें हैं और इनका प्रभाव भी व्यक्तिगत न होकर सामूहिक रूप ले हो रहा है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

प्रकृति के सन्दर्भ में व्यक्ति द्वारा अपना तकनीकि, भौतिक विकास करने के क्रम में सभी प्राकृतिक संसाधनों का अतिशय दोहन किया जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप प्रकृति में नकारात्मक, अनुक्रमणीय प्रभाव उत्पन्न हो रहें हैं। इन्ही प्रभावों को जलवायु परिवर्तन के अन्तर्गत शामिल किया जाता है। जलवायु परिवर्तन के लिए वनों की कटाई, औद्योगीकरण से फैलता जल, वायु तथा मृदा प्रदूषण, प्लास्टिक का अतिशय प्रयोग, जैव तथा रसायन हथियारों का विकास आदि कारक जिम्मेदार हैं। इसके परिणाम स्वरूप प्राकृतिक प्रक्रियाओं की आवृत्ति

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

तथा तीव्रता में बदलाव आया है। विरोधी प्रकृति की आपदायें एक साथ घटित हो रहीं हैं जैसे- चेन्नई में बाढ़ के बाद पड़ने वाला सूखा आदि।

पुनर्जागरण काल के दौरान, मनुष्य द्वारा विभिन्न आविष्कार किये गये तथा विज्ञान, तकनीक में अभूतपूर्व क्रांति हुयी जिसके चलते औद्योगीकरण की शुरुआत हुयी। औद्योगीकरण के क्रम में व्यक्ति द्वारा प्रकृति को अपने विकास का साधन मान लिया गया और पश्चिमी राष्ट्रों द्वारा इसका अतिशय दोहन किया गया। जिसमें वनों की कटाई, कोयले का ऊर्जा के लिए उपयोग आदि कार्यों द्वारा पर्यावरण में अत्यन्त हानिकारक

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

वक्तार्थों का उत्सर्जन किया गया। इस प्रक्रिया के सम्बन्ध में किसी ने कहा है कि

"औद्योगिक विकास के लिए हरे जंगलो का काटना उतना ही मूर्खतापूर्ण है जितना कि चाय बनाने के लिए किसी पुनर्जागरण कालीन चेटिंग को जलाना"

औद्योगीकरण के पश्चात एक तरफ जहाँ पर्यावरण की सहन सीमा कम हो रही थी तो दूसरी तरफ पश्चिमी राष्ट्र तकनीक, विज्ञान के मामलें में उन्नत हो गये। इसी क्रम में द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात तृतीय विश्व का उदय हुआ। जहाँ गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, आदि की उपस्थिति थी और जब उन्होंने

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अपने विकास हेतु प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया तो पर्यावरण की सीमा समाप्त हो गयी एवं जलवायु परिवर्तन की प्रवृत्ति का उद्गम हुआ।

इस प्रकार अनियंत्रित सुनामी, चक्रवाती तूफान, भूकम्प, ग्लोबल वार्मिंग, सूखा, बाढ़ आदि आपदाओं की बारम्बारता में अतिशय वृद्धि हुयी। चूँकि विकसित देश तकनीकी तथा आधारभूत संरचना के स्तर पर मजबूत हैं, वो इन आपदाओं के प्रति कम संवेदनशील हैं। जबकि विकासशील तथा अविकसित देशों में इन आपदाओं के चलते अव्यवस्था फैल जाती है और जन-धन की हानि भी ज्यादा होती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।

(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

इस बात को इस उदाहरण से समझा जा सकता है कि पश्चिमी यूरोप की विकासात्मक गतिविधियों के चलते अम्ल-वर्षा जैसी परिघटना पूर्वी यूरोप में ज्यादा प्रभावकारी बन रही है।

वस्तुतः पर्यावरण में वायुमंडल तथा जलमंडल की प्रकृति गतिशील है जिसमें एक जगह किया परिवर्तन अन्य जगहों पर भी प्रभाव डालता है और इसी वजह से विकसित देशों द्वारा उत्सर्जित हानिकारक गैसें तथा उनके प्रभाव इन क्षेत्रों पर भी पड़ते हैं जिन्होंने इनके उत्सर्जन में उतना योगदान नहीं दिया है।

इस प्रकार स्पष्ट है

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

कि जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मे दार देशों की अवेक्षा इसका परिणाम गैर-जिम्मेदार लोग भुगत रहें हैं। वहीं दूसरी तरफ ऐसा भी नहीं है कि विकसित देश इससे बिल्कुल अप्रभावित हैं। वस्तुतः वह भी अपनी करनी का परिणाम भुगत रहें है। इसे नार्वे. ग्रीनलैंड में होने वाली अम्ल वर्षा, लंदन का ऐतिहासिक वायु प्रदूषण संकट तथा अमेरिका का इस बार अत्यधिक ठंडा हो जाना; जैसे उदाहरणों से समझा जा सकता है। किन्तु यह देश अपनी तकनीकी तथा विकासात्मक क्षमता एवं आर्थिक सुदृढ़ता के चलते व्यापक प्रभावित

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

नहीं होते हैं। शायद इसलिए ही इन देशों को विभिन्न पर्यावरण संरक्षण सम्मेलनों तथा बैठकों में विकासशील तथा अविकसित राष्ट्रों की तकनीकी तथा आर्थिक मदद करने को कहा जाता है। ताकि इनको भी इन आपदाओं के शमन में सहायता मिल सके।

इसी प्रकार जलवायु परिवर्तन के खतरे के बावजूद न केवल विकासशील और अविकसित अपितु विकसित देशों द्वारा अभी भी विभिन्न पर्यावरण हानिकारक गतिविधियाँ लगातार की जा रहीं हैं। जिसके परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन की समस्या संकीर्ण होती जा रही है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

विकासशील तथा अविकसित देशों द्वारा भी इस प्रकार के कार्यों का लगातार करते रहना आने वाले समय में करने वाले तथा भरने वाले दोनों तरीके के राष्ट्रों के लिए नुकसानदायक होगा। इसके लिए विकसित राष्ट्रों को आगे आकर इनकी मदद करनी होगी ताकि पर्यावरण में बाकी बचा कार्बन स्पेस भी न समाप्त हो जाये और ग्लोबल वार्मिंग के परिणाम से मानव सभ्यता का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाये।

वस्तुतः इतिहास गवाह है कि मानव सभ्यता के विकास के क्रम में

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

विभिन्न सभ्यताओं का विनास हुआ तथा उनका विनाश भी हुआ लेकिन ज्यादातर के विनाश में प्राकृतिक असंतुलन ही जिम्मेदार रहा है। और अभी यदि हम नहीं समझें और हमनें अपनी जरूरतें कम नहीं की तो प्राकृतिक संसाधनों का यह अतिशय दोहन हमें एक दिन मानव सभ्यता के सम्पूर्ण विनाश की ओर ले जायेगा। जहाँ से लौटना बहुत मुश्किल होगा।

इस प्रकार जलवायु-परिवर्तन के लिए जिम्मेदार देशों को आगे आकर यह जिम्मेदारी उठानी चाहिए तथा व्यक्तिगत स्तर

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

पर हमें भोग-विलास की प्रवृत्ति तथा उपभोक्तावादी संस्कृति का अनुपालन छोड़ देना चाहिए ताकि संसाधनों का संतुलित उपयोग किया जा सके। इस सन्दर्भ में गाँधी जी का कथन अत्यन्त प्रासंगिक सिद्ध होता है, "प्रकृति मनुष्य की जरूरतें पूरी कर सकती है, उसके लालच को नहीं।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–B / SECTION –B

1. एक सुखी जीवन प्रकृति से प्रेरित एवं सहजता से संचालित होता है।
A good life is the one inspired by nature and conducted with ease.

2. व्यावहारिकता आदर्श की पुष्टि करती है।
Pragmatism affirms the ideal.

3. मूल्यविहीन शिक्षा व्यक्ति को चतुर शैतान बनाती है।
Education without values makes man a cleverer devil.

4. विकसित होते भारतीय समाज का द्वंद्व।
Conflicts in developing Indian society.

* "मूल्यविहीन शिक्षा व्यक्ति को चतुर शैतान बनाती है" *

"पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ,
पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का,
पढ़े सो पंडित होय।।

उपर्युक्त पंक्तियाँ शिक्षा व्यवस्था में मानवीय मूल्यों की आवश्यकता को निर्धारित करती हैं। वस्तुतः प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

में समाज में सबसे शिक्षित तथा ज्ञानवान वर्ग ब्राह्मणों / पंडितों को माना जाता था | जो अपने ज्ञान से समाज का विकास करते थे | किन्तु दयात्व है कि उनकी शिक्षा केवल तथ्य आधारित न होकर मूल्य आधारित होती थी | आधुनिक समय में जहाँ समाज में विकसित होने की दौड़ लगी है वहाँ पर व्यक्ति औपचारिक रूप से तो विकसित हो रहा है, किन्तु शिक्षा व्यवस्था में मूल्यों की गौड़ स्थिति के चलते व्यक्ति का आत्मिक विकास नहीं हो रहा है। शायद यही वजह है कि समाज में सहयोग, भाई-चारे, की भावना कमजोर पड़ रही है और व्यक्ति सफलता के

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

लालच में नैतिक रूप से अवनत होता जा रहा है।

शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य मनुष्य का चहुँमुखी विकास होना चाहिए। ताकि व्यक्ति न केवल स्वयं के बल्कि समाज के हित में भी कार्य कर सके। जिसमें व्यक्ति के अन्दर साहस, दया, निष्पक्षता, परोपकारिता न्याय जैसे मूल्यों का समावेशन जरूरी है ताकि समर्थ व्यक्ति अपने ज्ञान का उपयोग वंचितों के उत्थान हेतु कर सकें। विवेकानन्द ने कहा है कि, "मैं प्रत्येक उस व्यक्ति को देशद्रोही समझता हूँ जिसने अपनी शिक्षा ग्रहण करने के बाद दूसरों के उत्थान हेतु कोई प्रयास नहीं किया"

यह मूल्य युक्त

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

शिक्षा का ही कमाल है कि व्यक्ति अपने जीवन के बाद भी महापुरुष के रूप में जाना जाता है। वस्तुतः उसके कार्यों से समाज को लाभ मिलता है और व्यक्ति वैचारिक तौर पर अमरत्व प्राप्त कर लेता है। भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान विभिन्न व्यक्तित्वों में व्याप्त आजादी का ही मूल्य था। जिससे प्रेरणा पाकर वो लोग अंग्रेजों से भिड़ गये और अपनी जान की तक परवाह नहीं की। भगत सिंह स्वयं कहते थे

"मेरे जज्बातों से इस कदर वाकिफ है मेरी कलम,
गर मैं इश्क लिखना चाहूँ तो इंकलाब लिख जाता है।"

इस प्रकार के विचार

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

व्यक्ति में केवल तथ्यात्मक ज्ञान से नहीं आते बल्कि उसके अन्दर मानवीय मूल्यों का भंडार होता है। वहीं यदि शिक्षा प्रणाली में मूल्यों की महत्वा को नजर अंदाज कर व्यक्ति को केवल सफल बनाने की कोशिश की जायेगी तो शायद मूल्यविहीन शिक्षा से युक्त व्यक्ति सफल तो हो जायेगा किन्तु उसकी यह सफलता दीर्घकालीन नहीं होगी। वह समाज व जीवन की कठिन परिस्थितियों में जबराकर अन्याय या अनैतिकता का रास्ता भी पकड़ सकता है। आतंकवाद, नक्सलवाद, उग्रवाद, मॉब लिचिंग जैसी समस्यायें आधुनिक युग की मूल्य

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

विहीन शिक्षा का ही प्रतिफल है।

हिटलर का स्वंय को सर्वश्रेष्ठ मानना तथा जर्मन नस्ल को शासक नस्ल मानना या फिर ओसामा, जो कि एक समृद्ध परिवार से था तथा इंजीनियर भी था, द्वारा आतंकवाद की राह पकड़ लेना, क्या दर्शाता है? यही कि केवल शिक्षित होना ही काफी नहीं है। तथ्यों को रटकर, तकनीक का विकास कर, विज्ञान के प्रयोग से आप सबकुछ जान तो जाओगे किन्तु उसका प्रयोग कैसे करना है या कहाँ करना है? यह मानव के अन्दर विद्यमान मूल्य तय करते हैं। जैसे कि तकनीक के क्षेत्र में नाभिकीय तकनीक का

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस्तेमाल हिरोशिमा में भी किया गया था और आज ऊर्जा उत्पादन तथा कैंसर जैसी बीमारियों के इलाज में भी किया जा रहा है। यह सब अन्तर व्यक्ति के प्रदत्त मूल्यों की वजह से है। किसी ने सही कहा है कि "शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के खाली दिमाग को खुले दिमाग में बदलना है"

वस्तुतः जब व्यक्ति का मस्तिष्क खुल जाता है तो वह व्यक्ति वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा से युक्त हो जाता है। अन्यथा सहयोग, परोपकार, न्याय जैसे मूल्यों के अभाव में व्यक्ति स्वहित को प्राथमिकता देता है। कहते हैं कि रावण महा-

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

ज्ञानी था। किन्तु फिर भी उसने परस्त्री अपहरण किया और अन्ततः मृत्यु को प्राप्त किया। तो इससे यह स्पष्ट है कि केवल शिक्षा का होना ~~केवल~~ काफी नहीं है। वस्तुतः जीवन के विकास क्रम में समय-समय पर विभिन्न मूल्यों को ग्रहण करना भी जरूरी है।

भारतीय दर्शन के अनुसार "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता" का मतलब है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ स्वयं देवता निवास करते हैं।" किन्तु आज की इस भौतिक, तकनीक एवं शिक्षा प्रणाली में जहाँ व्यक्तिवाद तथा स्वार्थवाद का

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

इतना बोलबाला है। वहाँ स्त्री सम्मान के मूल्यों की कमी हो गयी मौर बलात्कार, छेड़छाड़, एसिड अटैक जैसी घटनाओं की पुनरावृत्ति हो रही है। अब सोचिए कि जिस समाज में 7 साल की लड़की का बलात्कार हो जाता है उस समाज की शिक्षा प्रणाली का स्तर कितना निम्न होगा। आखिर क्यों शिक्षा व्यवस्था में नैतिक ज्ञान तथा मूल्यों के विकास को प्राथमिकता ~~दी~~ नहीं दी जा रही है।

इसी प्रकार साइबर अपराध, चोरबाजारी जैसी घटनायें थी, जिसमें उच्च तकनीकी क्षमता युक्त व्यक्ति शामिल होता है।, भी शिक्षा के साथ साथ मूल्यों के महत्व को रेखांकित

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

करता है। मूल्यों का मानव जीवन में बहुत महत्व है। यदि व्यक्ति कम शिक्षित है तथा मूल्यों के स्तर पर सम्पन्न है तो यह स्थिति अच्छी है जैसे कि कहते हैं कि अकबर निरक्षर था किन्तु उसने अपने मूल्यों के आधार पर ऐसे सुधारात्मक कार्य किये कि आज उसे अकबर महान कहा जाता है। इसी प्रकार कबीर आदि उदाहरण भरे पड़े हैं। जहाँ व्यक्ति ने अशिक्षित होकर भी जीवन को महान बनाया है।

हालांकि शिक्षा का महत्व भी मानव जीवन में बहुत है। अभी सिकंदर ने कहा था कि "मैं अपने जीवन के लिए पिता का शुक्रगुजार

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

हूँ, किन्तु अच्छे जीवन के लिए अपने गुरु का।" यहाँ पर सिंकदर का तात्पर्य गुरु द्वारा प्रदत्त शिक्षा से इसके जीवन में आये गुणात्मक सुधार से है। किन्तु यह सुधार केवल तथ्यात्मक शिक्षा से नहीं आ सकते हैं। इसके लिए शिक्षा का मानव जीवन के लिए आवश्यक मूल्यों से परिपूर्ण होना है। ताकि व्यक्ति का समुचित विकास हो सके और वह हॉब्स के सुखवाद से मिल के उपयोगितावाद की तरफ अग्रसर हो। इसका एकमात्र उद्देश्य स्वहित की पूर्ति न हो बल्कि समाज, प्रकृति आदि का भी संरक्षण करे।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि मूल्य (सद्गुण) और शिक्षा भावस में एक-दूसरे के पूरक हैं तथा व्यक्ति के जीवन को तथा समाज व प्रकृति के हित को देखते हुए यह दोनों ही आवश्यक हैं। अन्यथा मूल्यों के अभाव में अनेकों सभ्यताओं का पतन हुआ है और इसका भी होगा। इसलिए हमें निम्नलिखित श्लोक का अनुपालन करने पर ध्यान देना चाहिए:-

"अभिवादन शीलस्य, नित्य वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते, आयुर्विद्या यशोबलम्॥"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation